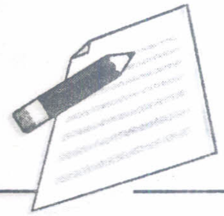

19

समाजीकरण–सीखने की एक प्रक्रिया

प्रत्येक समाज के अपने आचार-विचार, नैतिक नियम अधिनियम और कुछ आदर्श एवं जीवन-मूल्य होते हैं। अब तक आप समझ चुके होंगे कि हर समाज में अलग-अलग, सामाजिक संदर्भों में कुछ उचित और अनुचित व्यवहार निर्धारित होते हैं। एक बेटा या बेटी, भाई अथवा बहिन, भतीजा या भतीजी, एक आतिथेय अथवा अतिथि और एक मित्र के रूप में आप कैसा व्यवहार करें यह सभी आपकी संस्कृति के अनुसार सुनिश्चित होता है। इन बातों के विषय में हर संस्कृति में अपने-अपने तौर-तरीके निधारित हैं। उदाहरण के लिए हम अपने बुजुर्गों को पैर छूकर कर-बद्ध प्रणाम करके अथवा सामान्य रूप से उनके सामने अपना मस्तक झुकाकर उन्हें आदर और सम्मान करते हैं। बंगाल में बेटियाँ अपने माता-पिता से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनके चरण स्पर्श करती हैं जबकि उत्तर-प्रदेश में बेटियाँ इस स्थिति में माता-पिता के पैर नहीं छूतीं। वहाँ लड़कियों को देवी, लक्ष्मी आदि माना जाता है। साथ ही उन्हें कन्यादान करके (अर्पण करके) दूसरे परिवार को अर्पित किया जाता है। ऐसे अनेक नियम हैं जो एक से दूसरे समाज में भिन्न हैं तथा परस्पर मेल नहीं खाते। इस तरह यह स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति को ऐसे सामाजिक आदर्शों (नार्मस) और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों (अपेक्षाओं) से पूरी तरह अवगत या परिचित होना चाहिए ताकि वह निर्धारित सांस्कृतिक प्रथाओं के अनुरूप आचरण कर सके। इस पाठ में हम समाजीकरण की प्रक्रिया के विषय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप ,

- समाजीकरण की धारणा तथा अर्थ को स्पष्ट कर सकेंगे:
- इसके (अ) सांस्कृतीकरण (ब) समांगीकरण (मेल-मिलाप) के अन्तर्सबंधों का वर्णन कर सकेंगे;
- समाजीकरण के विभिन्न कारकों को बता सकेंगे;
- समाजीकरण के तत्वों का वर्णन कर सकेंगे;
- व्यक्तित्व के निर्माण में समाजीकरण की भूमिका को समझा सकेंगे और
- विभिन्न भारतीय समुदायों के संदर्भ में समाजीकरण की प्रक्रिया का विवेचन कर सकेंगे।

19.1 समाजीकरण की अवधारणा और उसका अर्थ

जब एक बच्चा पैदा होता है तो वह केवल एक शारीरिक रचना, एक जीव, होता है और समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से वह एक 'पुरूष' अथवा 'स्त्री', और दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति बनता है। एक परिवार, समुदाय और समाज की संस्कृति व्यक्ति में संस्कार डालती है और उसे मुनष्य (मानव) बनाती है। बालक अपने आसपास की मानवीय और भौतिक दोनों, शक्तियों के संपर्क में आता है। इसे समाज में आगे बढ़ने की एक प्रक्रिया कहा जा सकता है जिसे बालक अपनी उम्र के बढ़ने के अनुसार प्राप्त करता है और साथ ही जिससे वह अपने संबंधित समुदाय के सांस्कृतिक आदर्शों, रीतियों, नैतिक मूल्यों और विभिन्न सांस्कृतिक पद्धतियों से प्रभावित भी होता है। इस प्रक्रिया में बालक सांस्कृतिक पद्धतियों को ग्रहण करता है और अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक भूमिकाओं का निर्वाह करना सीखता है। इस प्रकार बालक स्वयं को सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल बनाने का प्रयास करता है। **समाजीकरण एक विस्तृत और अंतहीन प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के साथ जीवनपर्यंत चलती रहती है।**

> समाजीकरण नवजात परिवार, समुदाय और समाज द्वारा एक से अगली स्थिति को निरंतर अपनाने, ग्रहण करने तथा अग्रसर होने की एक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया दो अलग-अलग स्तरों पर कार्य करती है। एक स्वयं शिशु में चलती है जिसे आंतरिकीकरण कहते हैं, इसमें वह अपने परिवेश में मौजूद सभी वस्तुओं तादात्म्य स्थापित करता है। दूसरी बाह्य होती है जिसमें माता-पिता, अन्य परिवारिक सदस्य तथा अन्य सहचर आदि सम्मिलित होते हैं।

19.1.1 स्वांगीकरण तथा समाजीकरण के बीच संबंध

नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक स्तर पर मान्य व्यवहारों के तौर-तरीकों को सीखने और हृदयंगम करने की प्रक्रिया का नाम समाजीकरण होता है।

एक समाज के सदस्यों से उस समुदाय के नैतिक मूल्यों के अनुरूप आचरण की अपेक्षा की जाती है। नवांगतुकों के समांगीकरण (घुलमिल जाने) की प्रक्रिया से यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। नवागंतुक कोई अन्य समाजों से आने वाले प्रवासी अथवा उसी समाज की उपसंस्कृति वाले लोग नहीं होते अपितु नए पैदा हुए बच्चे होते हैं। नवजात शिशुओं की अपनी आवश्यकताएं, जैसे भोजन, लाड़-प्यार, आदि होती हैं, जो उनकी अपनी माँ द्वारा मुख्य रूप से तृप्त की जाती हैं। शिशु उसी पर निर्भर रहता है और भावनात्मक रूप से उसे ही अपना समझ कर पहचानता है। कुछ लोगों का तो यहाँ तक विश्वास है कि शिशु स्वयं को पहचानने अथवा मानने से पहले तो अपनी मां से ही परिचित होता है। माँ और शिशु की पहले-पहल सम्मिलित पहचान होती है। बच्चे की भोजन और अन्य शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति द्वारा बच्चा अपनी मां की 'हृदयंगम' कर लेता है। कुछ समय बाद बालक स्वयं एक सामाजिक पद्धति में जोड़ने वाली स्थिति का सामना करता है। इस प्रकार भूमिका-पद्धति जन्म लेती है। अतएव, बालक अपनी माता से स्वयं को अलग रूप से पहचानना या अलग महसूस करना सीखता है। यह माना जाता है कि बाद में बालक अपने पिता के साथ भी उसी समांगीकरण (घुलने-मिलने) की प्रक्रिया को दोहराता है। इस भाँति, बालक पिता को माता से अलग एक भिन्न व्यक्ति के रूप में पहचानता है तथा बाद में पिता को एक नए विस्तृत सामाजिक परिवेश में स्वयं से जोड़ता है। जिससे वह केवल अपने साथ पिता के संबंध को ही नहीं समझ लेता अपितु पिता से माता के संबंध को भी समझ लेता है। इस प्रकार समाजीकरण एवं स्वांगीकरण के मध्य संबंध स्थापित हो जाता है।

19.1.2 सांस्कृतीकरण और समाजीकरण

एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सांस्कृतिक पद्धतियों की सीख का संबंध सांस्कृतीकरण से होता है। सर्वदा नई पद्धतियाँ जुड़ती रहती हैं। इस भाँति समाज में बदलाव के साथ-साथ, सांस्कृतीकरण सांस्कृतिक सतता की पद्धतियों को भी सुनिश्चित करता है। सांस्कृतीकरण, चेतन और अचेतन अथवा दोनों तरीकों से होता है। इस स्थिति में पुरानी पीढ़ी, आनेवाली पीढ़ियों के सदस्यों को उनके अपने तौर-तरीकों, विचारों तथा व्यवहारों को अपनाने हेतु प्रभावित और प्रेरित करती है। इस भाँति, सांस्कृतीकरण पुरानी पीढ़ियों की सत्ता पर आधारित होता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि युवा पीढ़ी अन्य समुदायों के सांस्कृतिक रीति-रिवाज नहीं अपनाएँ। इस तरीके से, पुराने लोग

इस बात का ध्यान रखते हैं कि मौजूदा नैतिक मूल्य नवागुंतकों द्वारा आत्मसात किये जाएं ताकि ये जीवन-मूल्य आगे सबल और सतत बने रहें।

पाठगत प्रश्न 19.1

रिक्त स्थान भरिए:

1. समाजीकरण की प्रक्रिया एक .... प्रक्रिया है।

   (1) अस्थाई (2) लघुअवधीय

   (3) असतत (4) आजीवन चलने वाली

2. समाज में समाजीकरण की प्रक्रिया को एक .... की प्रक्रिया कहते हैं।

   (1) अनुकूलन (2) स्वांगीकरण (घुलने मिलने)

   (3) सीखने (4) बढ़ने

3. समाजीकरण की प्रक्रिया .... बनाए रखने में मदद करती है।

   (1) भावनात्मक स्थिरता (2) सामान्य परिचय (पहचान)

   (3) अपनी पहचान (4) सामाजिक-व्यवस्था

19.2 समाजीकरण के कारक

समाजीकरण के कारक सीखने की प्रक्रिया में सहायक होते हैं। यह सीखना प्राधिकारवादी (ऑथेरिटेटिव) और समतामूलक शक्तियों की देन है। प्राधिकारवादी शक्तियाँ वे हैं जो बालक के ऊपर अपना अधिकार रखती हैं। इनमें माता-पिता, परिवार, सांस्कृतिक तत्व और कानूनी सम्मतियाँ शामिल होते हैं। समतामूलक शक्तियों में सहचर समूह, संगी-खिलाड़ी, मित्र तथा अन्य संगी आते हैं। समाजीकरण के ये कारक समाज द्वारा मान्यता प्राप्त अनुकूलता और विचलन अथवा पुरस्कार और दंड की पद्धतियों के अनुरूप कार्य करते हैं।

समाजीकरण का मुख्य लक्ष्य बालक को स्थापित प्रतिमानों (नार्म्स) तथा व्यावहारिक पद्धतियों के अनुकूल शिक्षित करना और योग्य बनाना है। बढ़ता हुआ बालक निर्धारित दशाओं में पाला पोसा जाता है। एक व्यक्ति स्वीकृत सामाजिक प्रथाओं, प्रतिमानों और

नैतिक मूल्यों के अनुसार आचरण एवं व्यवहार की मर्यादाएँ सीखता है। यही बच्चे का सांस्कृतीकरण की दिशा में पहला कदम होता है, जब वह मौजूदा वातावरण के साथ अपनी पहचान बनाना सीखता है। समाजीकरण के कारक बच्चे के व्यवहार या आचरण में आये किसी भी भटकाव का तिरस्कार करते हैं पर बाद के व्यवहार पर अंकुश नहीं रखते। बच्चे के भटकावपूर्ण व्यवहार की स्थिति को नकारा नहीं जा सकता।

चित्र-1: एक सिख बालक अपने पिता से पगड़ी बांधना सीख रहा है

19.2.1 परिवार

जब पैदा होता है तो वह आश्रित और असहाय होता है। उसकी विभिन्न शारीरिक और मानसिक विशेषताएँ होती हैं। उसे अपनी शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए माता-पिता पर निर्भर रहना पड़ता है। शिशु की इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति माता ही करती है। हमने पहले चर्चा की है कि बच्चा भावनात्मक रूप से पहले माता से और फिर पिता से जुड़ता है। वह अपनी माता पिता तथा दादा-दादी से अपने संबंधों को पहचानता है और धीरे-धीरे उनमें अन्तर करना सीखता है। माता-पिता के बाद बच्चा उन भाई-बहिनों के निकट आता है जो उसकी देखभाल करते हैं, दुलारते हैं और उसके प्रति स्नेह रखते हैं। इस तरह, वह अपने भाई-बहिनों को एक नई तथा विस्तृत सामाजिक प्रणाली से जोड़कर देखने लगता है।

इस भाँति, अपने परिवार के ज्यादा से ज्यादा सदस्यों के संपर्क में आता है और उनके क्रियाकलापों तथा व्यवहार के तौर-तरीकों से उनके विविध स्वरूपों जैसे क्रोध करना, चिल्लाना, हँसना तथा हाथ, भुजा टाँग आदि हिलाने आदि की अनुक्रियाओं का अनुकरण करता है। इस प्रकार की विशेष भाव-भंगिमाओं से उसे परिवार के लोगों से घुलने-मिलने तथा उनसे स्वयं को जोड़ने में सहायता मिलती है। बच्चा परिवार के

लोगों के विषय में जानकारी को हृदयंगम करता है। इस प्रकार बच्चा अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सामने अपना जीवन प्रारंभ करता है। धीरे-धीरे सामाजिक संबंधों की यह प्रक्रिया तब विस्तृत होती है जब कि वह एक भरे-पूरे परिवार में रहता हो। इससे वह बच्चा ज्ञान, व्यवहार, तौर-तरीके अर्जित करता है और परिवार के प्रतिमानों के अनुकूल इन सभी पद्धतियों को हृदयंगम करता तथा सीखता है।

19.2.2 आस-पड़ोस

वह स्थान तथा गाँव जहाँ बच्चा बड़ा होता है उससे उसका आस-पड़ोस बनता है। आस-पड़ोस के भौतिक तथा सामाजिक वातावरण में उसका समाजीकरण होता है। वह अपने बड़े भाई-बहिनों, गांव तथा मोहल्ले अन्य बच्चों के साथ खेलता है और इस प्रकार आस-पड़ोस में उपलब्ध भौतिक और सामाजिक वस्तुओं के विषय में जानकारी प्राप्त करता है। वह आस-पड़ोस में क्रियाशील इन उपकरणों (वस्तुओं) की प्रकृति, विशेषताओं और उपयोगिताओं के विषय में सीखता है। वह स्वयं विभिन्न परिस्थितियों और विभिन्न जातियों के लोगों, समुदायों, धार्मिक तथा अन्य व्यावसायिक समुदायों के अनुकूल बनने की कोशिश करता है। इस तरह वह विभिन्न व्यक्तियों के विभिन्न गुणों और उनके समुदायों में भी भेद-विभेद करना सीखाता है। अपने भौतिक और सामाजिक दोनों प्रकार के आस पड़ोस के साथ अन्तर्क्रियाओं के दौरान वह विभिन्न जीवन निर्माण के तरीकों, विभिन्न प्रकार के व्यवसायों और इन व्यवसायों को अपनाने हेतु मिलने वाली सुविधाओं के लिए भौतिक वातावरण की भूमिका के बारे में सीख लेता है। वह अपने गाँव, स्थान और समुदाय के विभिन्न वर्गों में आस-पड़ोस की परस्पर निर्भरता की प्रक्रिया से भी परिचित हो जाता है। उन तरीकों और साधनों को भी वह पहचानता है जिनसे गाँव की अखंडता सुरक्षित रहती है। वह अपने स्वयं के विभिन्न समुदायों के अनुकूल कार्य और व्यवहार करना और उनके आदर्शों तथा जीवन मूल्यों को भी सीखता है। अन्य लोगों के व्यवहारों से उसे अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती है और इस प्रक्रिया में वह अपनी स्वयं की समझ को भी विकसित करता है। यही स्थिति समाजीकरण की प्रक्रिया है जो उसमें अनुशासन एवं व्यवस्थित व्यवहार पैदा करती है तथा उसे कौशल सिखलाती है।

19.2.3 विद्यालय / संस्थाएं

स्कूल और शैक्षणिक संस्थाएँ समाजीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। वे बालक को सीखने की परिस्थितियाँ और वातावरण प्रदान करते हैं जो उनमें अनुशासन लाते हैं और कुछ निश्चित गुणों को उसके मन में जमा देते हैं, जिनसे वह अपने व्यक्तित्व का

विकास कर सकता है। इस भाँति वह अपनी स्वयं की आवश्यकताओं को खोज सकता है और जिस समुदाय में रहता है उसकी आवश्यकताओं को समझ सकता है। इस तरह वह विद्यालय और अन्य शिक्षण संस्थाओं के द्वारा स्थापित आदर्शों के अनुकूल बनना सीखता है।

मानव-व्यवहार के विकास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परिवार के बाद कक्षा, साथी विद्यार्थी तथा शिक्षक ही वे व्यक्ति हैं जो बच्चे को प्रभावित करते हैं। शिक्षा व्यक्ति को नैतिकता, बौद्धिकता तथा सामाजिक अन्तर्दृष्टि प्रदान करती है। यह व्यक्ति को उसकी विरासत से जोड़ती है और उसके समक्ष एक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करती है।

इन शिक्षण संस्थाओं में बोए या रोपे गए प्रतिमान धीरे-धीरे व्यवहार के मानदण्ड प्रदान करते हैं और वे नियामक प्रकृति के होते हैं और सामाजिक क्रिया-कलापों का नियमन करते हैं। प्रतिमानों की अवहेलना करने से सामाजिक उपहास, बहिष्कार तथा कठोर दंड भी भुगतना पड़ सकता है।

19.2.4 समाज

हम समाज में रहते हैं। हमारे सभी क्रिया-कलाप और व्यवहार विभिन्न नियमों और विनियमों से बंधे होते हैं कोई व्यक्ति, समाज और जीवन की सामाजिक पद्धतियों की अवेहलना करके, स्वेच्छाचारी आचरण नहीं कर सकता। व्यक्ति की हर क्रिया और उसका हर व्यवहार समाज द्वारा निर्धारित प्रथाओं, रीति-रिवाजों, तथा प्रतिमानों और नैतिक मूल्यों के अनुरूप होना चाहिए। यदि समाज में रहने वाले लोग प्रचलित प्रतिमानों का अनुसरण तथा पालन करते हैं और पूर्णतः उनके अनुरूप कार्य करते हैं तो उन्हें पुरस्कृत किया जाता है और यदि इसके विपरीत आचरण करते हैं तो उनके भटके हुए एवं विचलित व्यवहार के लिए उन्हें दंडित किया जाता है।

19.2.5 पुरस्कार और दंड

समाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चे में बेहतर कार्य-कुशलता तथा स्पर्धा के भाव को बल प्रदान करने के लिए पुरस्कार और दंड का भी प्रावधान होता है।

पुरस्कार और दंड समाजीकरण के महत्वपूर्ण उपकरणों के रूप में कार्य करते हैं। इनके प्रयोग में एक मूलभूत अंतर है और ये विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। मानव एक सुसंस्कृत पशु है और अधिकांशतः प्रतीकों के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान करता है। जहाँ तक संभव होता है मानव प्रायः प्रतीकात्मक वर्जनाओं का ही उपयोग करता है और अन्य वर्जनाओं का सहारा तभी लेता है जब प्रतीकात्मक प्रयास असफल

हो जाएं। इस प्रकार पहले छड़ी की ओर इशारा करना ही ज्यादा कारगर होता है बजाए छड़ी के प्रयोग करने के। उसी तरह, कभी-कभी पुरस्कार से ज्यादा काम एक प्रसन्नतापूर्ण अभिशंसा की मुस्कराहट ही कर जाया करती है। जो व्यवस्था में गड़बड़ी करते हैं उनके विरुद्ध प्राय: सामाजिक नियंत्रण की प्रमुख शक्ल के रूप में दंड का प्रयोग किया जाता है। पुरस्कार और दंड दोनों की अपनी-अपनी भूमिकाएं हैं परंतु एकदम भिन्न और अलग-अलग रूप लिए।

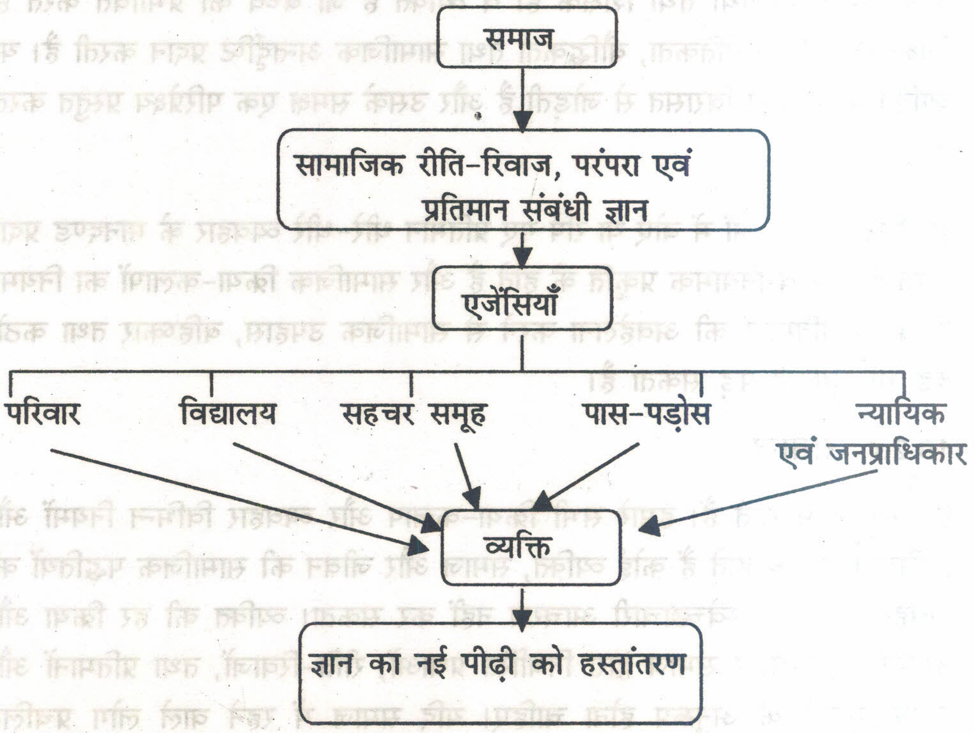

चित्र-2: समाजीकरण की क्रियाविधि

पाठगत प्रश्न 19.2

प्रत्येक वक्तव्य के सामने 'सही' या 'गलत', जो भी हो, लिखिए।

(1) समाजीकरण का मुख्य लक्ष्य बच्चे को स्थापित प्रतिमान तथा व्यवहार सिखलाना होता है।

(2) विद्यालय और शिक्षण संस्थाएँ समाजीकरण के महत्वपूर्ण एजेंट (माध्यम) नहीं हैं।

(3) हमारे सभी क्रिया-कलाप और व्यवहार समाज के विभिन्न नियमों और विनियमों द्वारा नियंत्रित होते हैं।

(4) पुरस्कार और दंड समाजीकरण और सामाजिक नियंत्रण के महत्वपूर्ण उपकरणों के रूप में कार्य करते हैं।

19.3 समाजीकरण के घटक

समाजीकरण के मूलभूत घटकों में से एक संप्रेषण है। यह संप्रेषण-कौशलों के द्वारा ही संभव होता है कि एक बच्चा अपनी भावनाओं को दूसरों तक संप्रेषित करना सीखता है। संप्रेषण की प्रक्रिया के माध्यम से ही सीखना संभव हो पाता है।

समाजीकरण के अन्य घटक भूमिका की पहचान और भूमिका का निर्वाह हैं। समाजीकरण एक बच्चे को अपनी निश्चित भूमिकाओं के प्रभावपूर्ण ढंग से निर्वाह के योग्य बनाता है। इस प्रकार यह बच्चे के सामाजिक व्यवहार को समाज द्वारा निर्धारित सामाजिक प्रतिमानों तथा नैतिक मूल्यों के अनुसार भूमिका-निर्वाह हेतु तैयार करता है।

समाजीकरण का एक घटक संस्कृति है जो एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को सौंपी जाती है। सामाजिक संगठन द्वारा एक संगठित समाज की रचना होती है और सीखने की प्रक्रिया द्वारा वह एक पीढ़ी से हस्तांतरित होता है। एक छोटे बच्चे द्वारा समाज के नैतिक मूल्य और उचित और सही समझे जाने वाले कार्य और विचारने के तौर-तरीके सीख लिए जाते हैं। समाजीकरण सीखने की इन प्रक्रियाओं से ही होता है।

19.4 एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में समाजीकरण की भूमिका

यह एक सामान्य विश्वास है कि व्यक्तित्व की अधिकांश विशेषताएं बच्चे द्वारा तीन से आठ वर्ष की उम्र में अर्जित कर ली जाती हैं। एक व्यक्ति के जीवन की यह अत्यंत विशिष्ट अवधि होती है, क्योंकि, उसके चरित्र और व्यक्तित्व की नींव इसी अवधि में डाली जाती है। इसकी पहले ही चर्चा हो चुकी है कि एक बालक अपनी वृद्धि के दौरान माता-पिता तथा भाई-बहिनों (बड़े) के द्वारा दिए गए प्रेम, भावनाओं तथा उनके द्वारा निभाई गई विभिन्न भूमिकाओं को अपने मन में धारण करता है और उनको महसूस करता रहता है। सामाजिक रूप से वांछनीय व्यवहार की भूमिका पूर्व निर्धारित है और हर भूमिका के संगत एक स्तर और अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के सुनिश्चित समुच्चय हैं। एक बच्चा मां-बाप, भाई-बहिन द्वारा प्रदर्शित लाड़-प्यार भरी भूमिकाओं तथा कार्यसाधना के लिए रखे गए अनुशासनपूर्ण व्यवहार और अपने लिए भोजन की व्यवस्था करने वालों को मन ही मन पहचान लेता है। खेलकूद के समय बालक को

अक्सर घर के मुखिया की भूमिका का निर्वाह करते हुए देखा जाता है, जिसमें वह पिता की भांति ही प्रात: काल घर से काम पर जाकर शाम को लौटकर वापस आता है। उसी भाँति एक लड़की माता की भूमिका निभाती हुई देखी जा सकती है।

जब एक बड़ा होता हुआ बच्चा अपने भाई-बहिनों (छोटे-छोटे) तथा अन्य परिवार के सदस्यों के साथ खेलता है और स्कूल जाने लगता है तो उसकी परिचित भूमिकाओं की संख्या और प्रकृति और बढ़ती चली जाती है। उसकी भूमिका की पहचान उसकी प्रकृति तथा परिवार एवं विद्यालय में अपने संगीसाथियों, शिक्षकों, प्रधानाध्यापक, समाज के सदस्यों, ग्रामवासियों तथा इसी तरह अन्य लोगों के साथ शामिल होकर भाग लेने की सामर्थ्य से होती है। वह परिवार तथा गाँव के अन्य व्यक्तियों एवं समुदाय के लोगों के विभिन्न रीति-रिवाजों, तथा व्यवसायों से परिचित होता है। अपने पिता के व्यवसाय से उसका लगाव होने के कारण वह उस व्यवसाय की विभिन्न स्थितियों को सीखता है। वह उस व्यवसाय से संबंधित विभिन्न कौशलों तथा मूलभूत नियमों और सिद्धान्तों को ग्रहण कर लेता है। वह हर काम में अपने पिता की सहायता करता है और एक प्रभावशाली एवं कुशल कार्यकर्त्ता बनने के उद्देश्य से कार्य करता है। इस प्रकार वह विभिन्न स्तरों तथा परिस्थितियों में, उससे वांछित विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए परिवार, समुदाय, समाज और राष्ट्र का एक उत्तरदाई सदस्य बन जाता है।

बाल्यावस्था के समाजीकरण की एक प्रमुख भूमिका होती है। यदि बच्चा सामाजिक होने लगेगा तो उससे वांछित विभिन्न भूमिकाओं को पहचानने में समर्थ हो जाएगा और वांछित भूमिकाओं के निर्वाह में पूर्णत: कार्यसाधक भी होगा।

भूमिका ग्रहण करने की प्रक्रिया में व्यक्ति वैयक्तिक विचार और अपनेपन की पहचान, स्वाभिमान तथा अन्तर्दर्शन की समझ या सीख भी स्वयं में विकसित करने लगता है।

वह परिवार, समुदाय तथा समाज के एक सदस्य के रूप में अपनी पहचान तथा छवि, अपना स्थान और स्तर बनाता है।

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि समाजीकरण छोटे बच्चों को सीखने के अवसर प्रदान करता है जो उन्हें अपनी सांस्कृतिक और सामूहिक भूमिकाओं और उन भूमिकाओं के निर्वाह करने के तरीकों के बारे में जानने में सहायता करते हैं। एक बढ़ते बच्चे के द्वारा अपनी भूमिका का निर्वाह समुदाय और समाज के मान्य प्रतिमानों के अनुकूल और अनुरूप मानवीय व्यवहार को प्रतिबिम्बित करता है। भूमिका निर्वाह के सिद्धान्त के मूलभूत नियम निम्नांकित हैं:

(1) भूमिका-संस्कृति की एक इकाई है;

(2) व्यक्ति का स्थान और प्रस्थिति समाज की इकाइयाँ हैं; एवं

(3) 'स्व' व्यक्तित्व की इकाई होती है।

भूमिकाओं के संदर्भ में व्यक्तियों के बीच पारस्परिक क्रिया घटित होती है और उसमें भूमिकाओं के साथ स्वयं की एक अंतर्क्रिया होती है। समकालीन भूमिका सिद्धान्त मानवीय व्यवहार को भूमिका और स्वयं की अन्तर्क्रिया के प्रतिफल के रूप में मानता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया

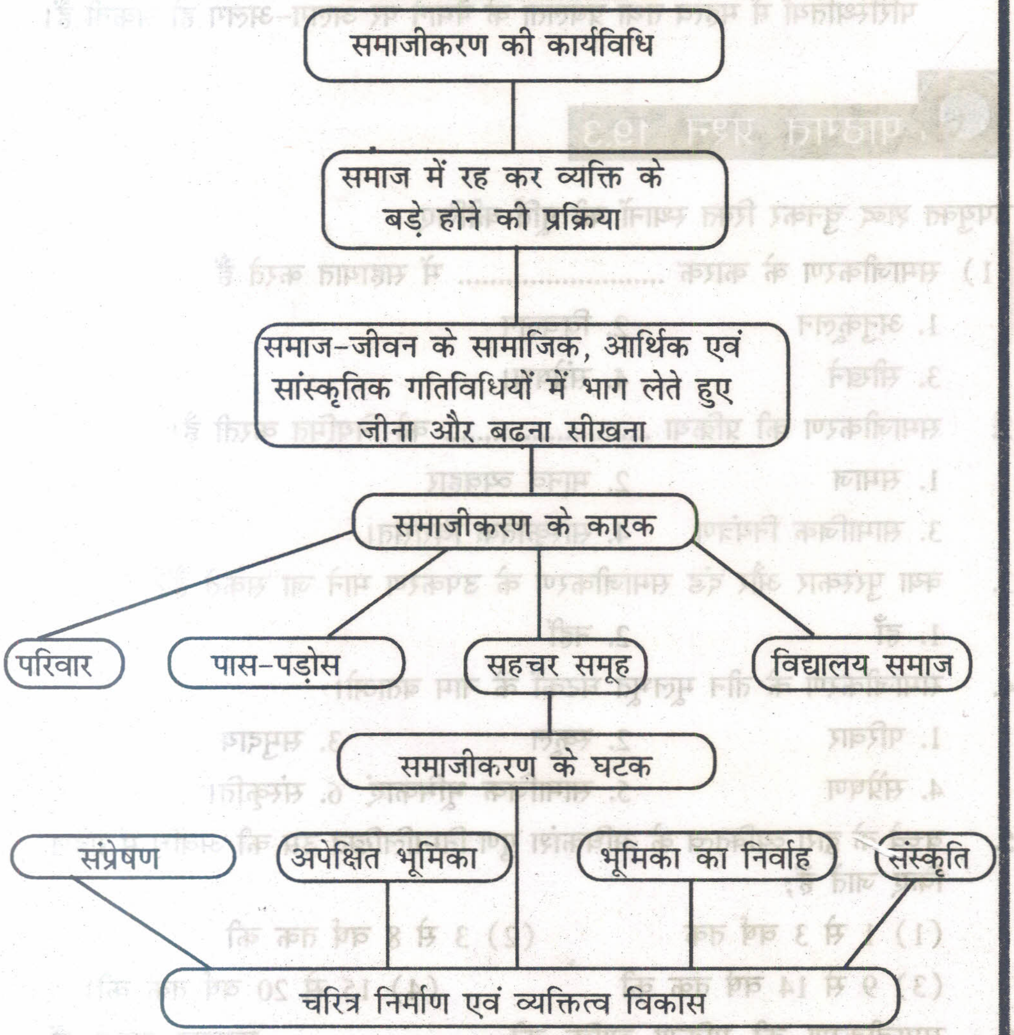

यह सत्य है कि समाजीकरण समुदाय के निश्चित प्रतिमानों की अनुकूलता पर जोर देता है। किंतु कुछ लचीलेपन और उचित चुनाव द्वारा व्यवहार को समरूपता की कठोरता से बचाया जा सकता है। कुछ भी हो, ऐसे कुछ व्यक्तियों के समाजीकरण में

असफलताएँ भी मिलती हैं जिनके व्यवहार सामाजिक प्रतिमानों से भटक जाते हैं। पहले हमें यह समझ लेने की आवश्यकता है कि सामाजिक व्यवस्था बड़े पैमाने पर सामाजिक प्रतिमानों को हृदयंगम कर लेने के आधार पर बनाई रखी जाती है। सीखने की प्रक्रिया इस प्रकार एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास और चरित्र-निर्माण में प्रभावपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

सामाजिक व्यवस्था समाजीकरण द्वारा ही बनाई रखी जा सकती है, सामाजिक नियंत्रण द्वारा नहीं। समाजीकरण और सामाजिक नियंत्रण में निहित मूलभत प्रक्रियाएँ एक समान हैं जैसे मान्य व्यवहार के लिए प्रशंसा और पुरस्कार एवं अमान्य व्यवहार के लिए डांट-डपट और दण्ड हैं अथवा अमान्य हैं। लोक व्यवहार में ये प्रक्रियाएँ उन दोनों परिस्थितियों में महत्व तथा प्रबलता के पैमाने पर अलग-अलग हो सकती हैं।

पाठगत प्रश्न 19.3

उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1) समाजीकरण के कारक .... में सहायात करते हैं

1. अनुकूलन 2. विचलन
3. सीखने 4. संप्रेषण।

2. समाजीकरण की प्रक्रिया .... को नियमित करती है।

1. समाज 2. मानव व्यवहार
3. सामाजिक नियंत्रण 4. सांस्कृतिक विरासत।

3. क्या पुरस्कार और दंड समाजीकरण के उपकरण माने जा सकते हैं?

1. हाँ 2. नहीं

4. समाजीकरण के तीन मूलभूत घटकों के नाम बताओ।

1. परिवार 2. स्कूल 3. समुदाय
4. संप्रेषण 5. सामाजिक भूमिकाएं 6. संस्कृति।

5. बच्चे के द्वारा व्यक्तित्व के अधिकांश गुण निम्नलिखित उम्र की अवधि में ग्रहण किए जाते हैं;

(1) 1 से 3 वर्ष तक (2) 3 से 8 वर्ष तक की
(3) 9 से 14 वर्ष तक की (4) 15 से 20 वर्ष तक की।

6. समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति की .... पहचान बनाने में सहयता करती है।

1. सामूहिक 2. स्वयं की
3. सामुदायिक 4. सामाजिक।

Notes

आपने क्या सीखा

- समाजीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है।
- यह बच्चे की शारीरिक और मानसिक वृद्धि और विकास में सहायता करती है। उम्र में वृद्धि के साथ उसका मानसिक और शारीरिक विकास होता है।
- समाजीकरण बच्चे की अपने आसपास की वस्तुओं, प्रथाओं, रीति-रिवाजों, संस्कृति तथा परंपराओं द्वारा निर्धारित प्रतिमानों एवं मान्यताओं को ग्रहण करने और हृदयगम करने में सहायता करता है।
- समाजीकरण की प्रक्रिया आजीवन चलनेवाली प्रक्रिया है जो पालने से कब्र तक सतत बनी रहती है और यहाँ तक कि वह गर्भावस्था से ही प्रारंभ होती है।
- यह एक नवीन परिस्थिति को प्रकाश में लाती है जो ध्यान देने योग्य होती है तथा आकांक्षा एवं अभिलाषापूर्णता के एक वातावरण को जन्म देती है तथा आनंदपूर्ण जीवन का स्वागत करती है।
- समाजीकरण के माध्यम माता-पिता, परिवार, विद्यालय, आस-पड़ोस, सांस्कृतिक-कारक, सामाजिक प्रतिमानों तथा समाज के नैतिक मूल्य होते हैं। ये सभी प्राधिकारवादी शक्तियाँ हैं।
- समतामूलक शक्तियों में खेलकूद के साथी, मित्रगण तथा अन्य सहचर सम्मिलित होते हैं।
- समाजीकरण का प्रमुख लक्ष्य बच्चे को सिखाना और स्थापित प्रतिमानों तथा व्यवहार के अनुरूप ढालना होता है।
- समाजीकरण के मुख्य घटक संप्रेषण, भूमिका की पहचान और भूमिका-निर्वाह तथा वह संस्कृति होती है जिसका अनुसरण करके बच्चा जीवन में अग्रसर होता है।
- ये घटक मान्य प्रतिमानों तथा नैतिक मूल्यों के अनुकूल बच्चे के व्यवहार को नियमित करते हैं। इस तरह समाजीकरण की प्रक्रिया बच्चे के चरित्र-निर्माण और व्यक्तित्व के विकास में बड़े पैमाने पर एक प्रबल भूमिका का निर्वाह करती है।
- समाजीकरण समुदाय समूह के निश्चित प्रतिमानों के अनुकूल व्यवहार पर बल देता है, फिर भी कभी-कभी कुछ विचलन या भटकाव हो जाते हैं जो समाजीकरण के प्रयास में एक असफलता माने जाते हैं।
- बच्चा समाज के जीवन मूल्यों को सीखता है और उसके कार्य करने तथा सोचने-विचारने के तौर-तरीके एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में संक्रमित होते जाते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. समाजीकरण की धारणा तथा अर्थ को स्पष्ट कीजिए।
2. स्वांगीकरण (मेल-मिलाप), सांस्कृतीकरण तथा समाजीकरण में परस्पर संबंधों का विवेचन कीजिए।
3. समाजीकरण के विभिन्न माध्यम कौन-कौन हैं?
4. समाजीकरण के मूलभूत घटकों की सोदाहरण विवेचना कीजिए।
5. ''समाजीकरण एक व्यक्ति के व्यक्तित्व-विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

शब्दकोष

1. हृदयंगम करना (इंटरनेलाइजेशन): सूचनाओं का अचेतन रूप से मन (इंटरनेलाइजेशन) में समा जाना अथवा किसी व्यक्ति द्वारा सीखने के बाद दृष्टिकोण, व्यवहार आदि में अपनी प्रकृति का एक अंग बना लेना।
2. कारक माध्यम (एजेन्ट): व्यक्ति अथवा समूह (समुदाय) जो एक प्रभाव उत्पन्न करते हैं अथवा व्यक्ति या समूह (समुदाय) जो समाजीकरण की प्रक्रिया को सुविधा या गति प्रदान करते हैं।
3. भूमिका की पहचान (रोल आइडेंटीफिकेशन): अन्य व्यक्ति के व्यवहार के अनुसार स्वयं को तैयार करना (सिखाना) अथवा अन्य व्यक्ति की भूमिका (कार्यशैली) से स्वयं को परिचित करना।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1

1. (iv) 2. (ii) 3. (iv)

19.2

1. सही 2. गलत 3. सही 4. सही

19.3

1. (iii) 2. (iv) 3. (i) 4. (iv), (v), (iv)